राष्ट्रीय सहारा उर्दू

६ दिसम्बर २००८

संघ परिवार की देन है फौज में राष्ट्र विरोधी तत्व

अज़ीज बर्नी

संघ परिवार का जन्म वैसे तो 1925 में हुआ लेकिन इस साम्प्रदायिक सोच की जड़ें और भी गहरी हैं। देश की आज़ादी के संघर्ष में सक्रिय रही कांग्रेस जिसमें हिन्दू व मुस्लिम सभी शामिल थे और इस पार्टी में हिन्दुओं का ही बहुमत था बावजूद इसके हिन्दू साम्प्रदायिक मांसिकता के व्यक्तियों को 1901 में हिन्दू महासभा के नाम से एक साम्प्रदायिक संगठन की स्थापना की अवश्यकता प्रतीत हुई। परिणामस्वरूप 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई, उस समय तक हिन्दू महासभा के 5 वार्षिक अधिवेशन हो चुके थे। बटवारे के बाद मुस्लिम लीग की स्थापना तो केवल कागज़ों तक ही सीमित रही। 544 सदसयों वाली लोकसभा में मुस्लिम लीग के केवल दो ही सदस्य रहे अर्थात 61 वर्षो में मुसलमानों ने इस पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर नहीं अपनाया। जब्कि हिंदू महासभा की कोख से जन्म लेने वाला संघ परिवार जिसकी राजनीतिक पार्टी पहले भारतीय जन संघ और अब भारतीय जनता पार्टी के रूप में इस साम्प्रदायिक सोच को राष्ट्रीय स्तर पर परवान चढ़ाती रही जिसका भयानक परिणाम पूर्व फौजी अफसर मेजर उपाध्याए और हाल ही में फौज से निकाले गए लेफटीनेंट कर्नल पुरोहित के रूप में हमारे सामने है। आजके इस लेख में हम संघ परिवार और उससे संबंधित संस्थाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे है ताकि आगे जब हम इस साम्प्रदायिक संगठन दुर्गावाहनी, साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर और योगी आदित्य नाथ जैसों के करतूत का पर्दाफाश करें तो हमारे पाठक और हमारे देशवासी यह समझ सकें कि देश में भेदभाव और संकीर्ण मानसिकता का ज़हर फैला कर यह लोग किस प्रकार देश में आतंक का वातावरण पैदा कर रहे हैं।

संघ परिवार की सहयोगी संस्थाएं

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ (आर.एस.एस.) की सहयोगी संस्थाएं : राष्ट्रीय सेवा समिति, भारतीय जनसंघ, विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय जनता पार्टी, बजरंग दल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, राष्ट्रीय सुख संगत, भरतीय मज़दूर संघ, हिन्दू स्वंय सेवक संघ, स्वदेशी जागरण मंच, दुर्गा वाहिनी, सेवा भारती, भारतीय किसान संघ, बाला गोकुल, विद्या भारती और भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम।

दृष्टिकोण

हिन्दू राष्ट्र, हिन्दुत्व, सम्पूर्ण मानवता, हिन्दू राष्ट्र, राम जन्म भूमि, अखण्ड भारत, यूनीफार्म सिविल कोड।

आर.एस.एस

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ (आर.एस.एस.) संघ या आर.एस.एस. के नाम से जानी जाती है। हिन्दुस्तान की यह संस्था स्वंय को हिन्दू राष्ट्र स्वंय सेवक संघ के रूप में पेश करती है। 1925 में इसकी नींव डा. के.बी.हैडगेवार ने डाली थी। आर.एस.एस. न सिर्फ़ पूरे देश में काम कर रही है बल्कि पड़ोसी देशों और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अलग-अलग नाम से काम कर रही है। म्यानमार (बर्मा) में सनातन धर्म स्वंय सेवक संघ (एस.डी.एस.एस.), मॉरीशस में मॉरीशस स्वंय सेवक संघ (एम.एस.एस.) और अन्य देशों में हिन्दू स्वंय सेवक संघ (एच.एस.एस.) और अन्य देशों में भी अन्य नामों से काम कर रही है।

आर.एस.एस. का उद्देश्य राष्ट्रीय संस्कृति को संपूर्ण मानव समाज के रूप में आगे बढ़ाना है। आर.एस.एस. का उद्देश्य देश की संस्कृति और धार्मिक शिक्षा को उभारना है। संस्था का सोचना है कि हिन्दुत्व एक धर्म नही बल्कि जीवन व्यतीत करने का तरीक़ा है। आर.एस.एस. का दावा है कि भारत माता की शक्ल में देश और जनता की सेवा और जो हिन्दुस्तान को भारत माता समझते है, उनके अधिकारों की रक्षा की जाये। संपूर्ण व्यक्तिव की पहचान भी भाजपा का राजनीतिक विचार है और पूर्व जनसंघ का भी यही दावा था। आर.एस.एस. ने कभी सीधे सीधे चुनाव में भाग नहीं लिया, लेकिन स्वदेशी एवं सांस्कृतिक भारतीयता का समर्थन करने वाली पार्टियों की समर्थक रही है। आम तौर पर आर.एस.एस. ने भाजपा का समर्थन किया है। आर.एस.एस. एक संगठित संस्था है जिसका मुखिया सरसंघ चालक होता है जो कि सबसे ऊँचा पद है। स्वदेशी का अर्थ है बाहर की चीज़ों का बायकाट किया जाये।

आर.एस.एस. पर भारत में तीन बार प्रतिबंध लगाया गया है। उस समय की सरकारों ने महसूस किया कि इसकी गतिविधियाँ देश के लिए ख़तरनाक है। 1948 में महात्मा गांधी की हत्या, 1975 में इमरजेन्सी के दौरान और तीसरी बार 1992 में बाबरी मस्जिद की शहादत के उपरांत प्रतिबंध लगाया गया। इन पाबंदियों को सुप्रीम कोर्ट ने हटा दिया क्योंकि कथित गतिविधियों में संलिप्त होने के बारे में आर.एस.एस. के विरूद्ध कोई साक्ष्य नहीं मिला। सी.आई.ए. की वर्ल्ड फेक्ट बुक के अनुसार राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ एक कट्टरवादी और चरमपंथी संस्था है।

आर.एस.एस. की गतिविधियाँ और इतिहास

1925 में डा. केशव बालीराम हैडगेवार नामक नागपुर के एक डॉक्टर ने इतिहास और उस समय की स्थितियों का पूर्ण अध्ययन किया और आर.एस.एस. की स्थापना की। जिसका उद्देश्य हिन्दुओं को संगठित करना था। हैडगेवार का प्रस्ताव था कि हिन्दू चुनौतियों और भारत की स्वतंत्रता के लिए एक हो जायें। आर.एस.एस. ने अपनी राष्ट्रीयता की आइडियालॉजी, त्याग और कार्यकर्ताओं की बुनियाद पर देश भर में अपनी जड़ें मज़बूत कर लीं। प्रचारक (फ़ुल टाइम वर्कर) और कार्यकर्ता देश भर में फैल गये। आर.एस.एस. विश्व भर में सबसे बड़ी सामाजिक उत्थान की संस्था कही जाती है। देश के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इंडियन नैशनल कांग्रेस के राष्ट्रीय आंदोलनों में आर.एस.एस. ने भाग लिया। कई कांग्रेसी नेता आर.एस.एस. को कांग्रेस में शामिल करने के हक़ में थे और उन्होनें आर.एस.एस. लीडरशिप से आह्वान भी किया था मगर संस्था धीरे धीरे कांगेस से दूर हो गई और एक अलग रास्ता अपना लिया।

बटवारे की गतिविधियाँ

भारत के इतिहास में देश का बंटवारा एक बहुत बड़ी घटना कहा जा सकता है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख सहित लाखों इंसानों को देश छोड़ना पड़ा। पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान की स्थापना के बाद दंगे, फ़साद और ख़ून ख़राबा हुआ और लाखों इंसानों की जानें गईं। लाखों हिन्दुओं और सिखों के भारत आने के बाद आर.एस.एस. ने रिलीफ़ कैंपों की व्यवस्था की थी, जिसके कारण उसे स्वीकार्यता मिली। इस दौरान हिन्दू मुस्लिम दंगे फूट पड़े और इस मौके पर आर.एस.एस. ने काफ़ी सरगर्मी दिखाई।

महात्मा गांधी की हत्या

1948 में नाथूराम गौडसे ने महात्मा गांधी का क़त्ल कर दिया। जिसके बाद आर.एस.एस. के कुछ कार्यकर्ताओं को जेल भी भेज दिया गया, जबकि गौडसे के आर.एस.एस. के साथ क्या संबंध है इसकी जाचं की गई और 4 फरवरी 1948 को आर.एस.एस. पर प्रतिबंध लगा दिया गया। आर.एस.एस. के साथ गौडसे के संबंध साबित नहीं हुए। आर.एस.एस. के नेताओं को सुप्रीम कोर्ट ने गांधी जी की हत्या के षडयंत्र से बरी कर दिया और न्यायालय के दख़ल के नतीजे में भारत सरकार ने इस शर्त के साथ संस्था पर से प्रतिबंध हटाया कि वह अपनी एक गाइड लाइन तैयार करेगी। दूसरे सरसंघ चालक गोलवालकर ने संस्था की यह गाइड लाइन तैयार की और मार्च 1949 में सरकार को मंज़ूरी के लिए भेजी। जुलाई में इसमें कुछ रद्दो बदल और काटछांट के बाद सरकार ने इसे स्वीकार कर लिया और संस्था पर से प्रतिबंध हटा लिया गया। एम.एस. गोलवालकर गुरूजी के नाम से मशहूर थे और वह 19 फ़रवरी 1906 को नागपुर के पास रामटेक में पैदा हुए। आर.एस.एस. के 45 लाख सक्रिय कार्यकर्ता है।

शाखाएं

शाखा का अर्थ ब्रांच होता है। संस्कृत में उसे शाखा कहा जाता है। आर.एस.एस. की सभी गतिविधियां इन शाखाओं से भी चलती हैं और दूसरी जगहों से सम्पर्क रखा जाता है। हर सुबह प्रभात शाखा और शाम को सांध्य शाखा की व्यवस्था होती है। कई जगहों पर रात्रि शाखाएं भी होती हैं और एक प्रोग्राम जनता के लिए और खुली जगहों पर केवल एक घण्टे का होता है। देशभर में 60 हजार शाखाएं है और संस्था का दावा है कि इन प्रोग्रामों में जात–पात और सामाजिक तौर पर पिछड़े लोग हिस्सा लेते हैं। प्रतिदिन 42 हज़ार सभाएं, 5 हज़ार साप्ताहिक और 2 हज़ार मासिक सभाएं होती है। उपरोक्त सभाएं बिना किसी कार्यालय के मैदानों में होती हैं और शाखा "नमस्ते सदा वित्साल्य मातृभूमि" पर सम्पन्न होती है। इन सभाओं के दौरान योगा, खेलकूद, सामाजिक मुद्दों पर बातचीत, भारत माता की पूजा और बौद्धिक का दौर भी होता है। शाखा आर.एस.एस. के बुनियादी ढांचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

आर.एस.एस. की वेशभूषा

आर.एस.एस. की वूशभूषा में काली टोपी, सफेद शर्ट और ख़ाकी रंग का नैकर होता है। गुरू पूर्णिमा के अवसर पर आर.एस.एस. के कार्यकर्ता भगवा ध्वज को प्रणाम करते है। आर.एस.एस. की सोच है कि सैकड़ों साल की विदेशी सत्ता के दौरान भारतीय समाज पर गहरा असर पड़ा और भारतीय संस्कृति प्रभावित हुई। आर.एस.एस. की आइडियालॉजी इन्टीग्रल ह्यूमनिज़्म और कल्चरल नैशनलिज़्म पर आधारित है।

संघ की राजनीतिक शाख बी.जे.पी

संघ परिवार की हिन्दू तहरीक के साथ सियासी पार्टियां भी काम करती रही है। भारतीय जनता पार्टी का पुराना नाम भारतीय जनसंघ था। बी.जे.पी. की नींव 1980 में डाली गई, जो भारत में एक बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर सामने आई है। बजरंग दल, वी.एच.पी. की नौजवान शाख़ है। भारतीय मज़दूर संघ, मेहनत, मज़दूरी करने वालों की संस्था (यूनियन) है। हिन्दू स्वंय सेवक संघ एक सामाजिक एवं धर्मिक संस्था है जो कि सामाजिक कार्यों के साथ पूरे देश में हिन्दुत्व को फैलाने के लिए प्रयासरत है। भारतीय किसान संघ, संघ की किसानों के अधिकारों के लिए कार्य करने वाली संस्था है, जिसका सीधा संबंध आर.एस.एस. से है। बाला गोकुलम, बच्चों के लिए 1970 में केरला में बनाई गई। माधवराव सदाशिव गोवालकर उर्फ़ गुरूजी आर.एस.एस. के दूसरे सरसंघचालक थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के साथ डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय जनसंघ के प्रमुख नेता थे। अटल बिहारी बाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी भी राजनीतिक अखाड़े में रहे है। बाजपेयी एन.डी.ए. के शासनकाल में प्रधानमंत्री रहे है। एल.के.आडवाणी का संबंध कराची से है और वह अभी लोकसभा में नेता विपक्षी दल है।

अशोक सिंघल वी.एच.पी. के अर्न्तराष्ट्रीय अध्यक्ष है जबकि गुजरात से संबंध रखने वाले प्रवीण तोगड़िया अर्न्तराष्ट्रीय महामंत्री है।

आर.एस.एस. की वेशभूषा

आर.एस.एस. की वूशभूषा में काली टोपी, सफेद शर्ट और ख़ाकी रंग का नैकर होता है। गुरू पूर्णिमा के अवसर पर आर.एस.एस. के कार्यकर्ता भगवा ध्वज को प्रणाम करते है। आर.एस.एस. की सोच है कि सैकड़ों साल की विदेशी सत्ता के दौरान भारतीय समाज पर गहरा असर पड़ा और भारतीय संस्कृति प्रभावित हुई। आर.एस.एस. की आइडियालॉजी इन्टीग्रल ह्युमनिज़्म और कल्चरल नैशनलिज़्म पर आधारित है।

संघ की राजनीतिक शाख बी.जे.पी

संघ परिवार की हिन्दू तहरीक के साथ सियासी पार्टियां भी काम करती रही है। भारतीय जनता पार्टी का पुराना नाम भारतीय जनसंघ था। बी.जे.पी. की नींव 1980 में डाली गई, जो भारत में एक बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर सामने आई है। बजरंग दल, वी.एच.पी. की नौजवान शाख़ है। भारतीय मज़दूर संघ, मेहनत, मज़दूरी करने वालों की संस्था (यूनियन) है। हिन्दू स्वंय सेवक संघ एक सामाजिक एवं धर्मिक संस्था है जो कि सामाजिक कार्यो के साथ पूरे देश में हिन्दुत्व को फैलाने के लिए प्रयासरत है। भारतीय किसान संघ, संघ की किसानों के अधिकारों के लिए कार्य करने वाली संस्था है, जिसका सीधा संबंध आर.एस.एस. से है। बाला गोकुलम, बच्चों के लिए 1970 में केरला में बनाई गई। माधवराव सदाशिव गोवालकर उर्फ़ गुरूजी आर.एस.एस. के दूसरे सरसंघचालक थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के साथ डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय जनसंघ के प्रमुख नेता थे। अटल बिहारी बाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी भी राजनीतिक अखाड़े में रहे है। बाजपेयी एन.डी.ए. के शासनकाल में प्रधानमंत्री रहे हैं। एल.के.आडवाणी का संबंध कराची से है और वह अभी लोकसभा में नेता विपक्षी दल है।

अशोक सिंघल वी.एच.पी. के अर्न्तराष्ट्रीय अध्यक्ष है जबकि गुजरात से संबंध रखने वाले प्रवीण तोगड़िया अर्न्तराष्ट्रीय महामंत्री है।

दुर्गा वाहिनी

दुर्गा वाहिनी विश्व हिन्दू परिषद की महिला शाख़ है और बजरंग दल के बराबर है। दोनों संस्थाएं वी.एच.पी. की हथियारों से परिपूर्ण संस्थाएं है। दुर्गा वाहिनी का उद्देश्य हिन्दू महिलाओं को सामाजिक और धार्मिक सेवाओं के लिए प्रेरित करना है। मगर दुर्गा वाहिनी के अर्न्तगत महिलाओं को फ़ौज और आत्मरक्षा की ट्रेनिंग देने के कारण झगड़ा पैदा होता रहा है। साध्वी प्रज्ञा की गिरफ़्तारी के बाद दुर्गा वाहिनी के नाम पर बहस छिड़ गई है। इस संस्था में 15-20 साल की लड़कियों को हथियार चलाने की ट्रेनिंग दी जाती हैण 20 वर्ष पूर्व इसकी नींव रखी गई थी।

संघ परिवार का कहना है कि दुर्गा वाहिनी का कार्यक्षेत्र केवल मंदिर और दूसरे धर्मिक स्थल है, जहां भजन और सतसंग किये जाते है। "हमारा उद्देश्य समाज में पैठ बना रहे विदेशियों की संस्कृति से लड़कियों को बचाना एवं स्वदेशी संस्कृति और पूर्वजों के आर्दशों से आगाह कराना है।" इनके अनुसार टी.वी. ने भारतीय संस्कृति को सबसे अधिक बरबाद किया है और इसका असर लड़कियों पर अधिक पड़ रहा है। दुर्गा वाहिनी का मुख्यालय दिल्ली में है और इसकी अध्यक्ष माला रावल है, जिनका संबंध गुजरात से है। दुर्गा वाहिनी की सभी ज़िलों में शाखायें शुरू करने का काम इनके निर्देशन में तेज़ी के साथ जारी है। 30 साल की उम्र पार करने के बाद दुर्गा वाहिनी की सदस्या स्वंय वी.एच.पी. की सदस्या बन जाती है। रावल के अनुसार दुर्गा वाहिनी की सदस्या को कराटे, एयरगन शूटिंग, लाठी चलाना, योगा और ध्यान गर्मियों की छुट्टियों में सिखाया जाता है। रावल का दावा है कि इसकी संस्था से लाखों लड़कियां जुड़ी हुई है। तमिलनाडु और केरला को छोड़ कर इसकी शाखायें पूरे देश में फैली हुई हैं। बजरंग दल की तरह दुर्गा वाहिनी बनाई गई, बजरंग दल को 25 वर्ष हो चुके है और उसके सदस्यों की संख्या 25 लाख से अधिक है। रावल ने साध्वी प्रज्ञा के साथ किसी भी प्रकार के संबंध से इन्कार कर दिया।

आर.एस.एस. और दूसरे धर्म

संघ परिवार आम तौर पर हिन्दुत्व के फ़लसफ़े का हामी है। मंउ ैज अपचती ठीनकी टंपकंदजप ेंलकीपअं ïनजनउइंरंउ (हक़ एक है उसके कई नाम है और कायनात एक ख़ानदान है।) लेकिन इसके साथ भी उनकी सोच है कि हिन्दू सोसाइटी को बार-बार की ज़्यादतियों और विशेषकर मुसलमानों से बड़ा ख़तरा है। आर.एस.एस. गांधी जी के उस क़ौल से मुत्तफ़िक़ है कि हिन्दूइज़्म में ईसाइयों, मुसलमानों, पारसियों और यहूदियों के लिए जगह है क्योंकि मुसलमानों की गड़ी संख्या धर्म परिर्वतन के कारण मुसलमान हुई है और उन्हें ताक़त के बलबूते मुसलमान किया गया।

आर.एस.एस. की ओर से इस बात को ख़ारिज कर दिया जाता है कि वह किसी दूसरे धर्म को बर्दाशत नहीं करती है। आर.एस.एस. के प्रवक्ता राम माधव का कहना है कि मुस्लिम विरोधी पॉलिसी का दोष सरासर बेबुनियाद है। इसके कारण संस्था की आईडियालॉजी को नुकसान पहुंचेगा, लेकिन उनका कहना है कि संस्था अपने कल्चर और राष्ट्र में एकीकरण पर विश्वास रखती है। जिसके विरोध पर झगड़ा होता है और बंटवारा भी इसी का नतीजा है।

सरसंघ चालक

सरसंघ चालक आर.एस.एस. का मुखिया होता है। डा. केशव बालीराम हैडगेरवार इसके संस्थापक अध्यक्ष थे (1925-1930 व 1931-1940)।

डा. लक्ष्मण वामन प्रांजपा (1930-1931) इस दौरान हैडगेवार जेल में थे।

माधवराव सदाशिव गोलवालकर उर्फ़ गुरूजी (1940-1973)

माधुकर दत्तारया देवरस उर्फ़ बाला साहब (1973-1993)

राजेन्द्र सिंह उर्फ़ राजा भय्या (1993-2000)

कपाहिली सीता माया सुदर्शन (2000 अब तक)